अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली | बुधवार, 11 सितंबर 2019

आईने में देखकर मुस्कराओ। हर सुबह ऐसे ही करो, कुछ समय बाद आपको अपने जीवन में एक बड़ा अंतर दिखाई देने लगेगा। - योको ओनो

जापानी कलाकार

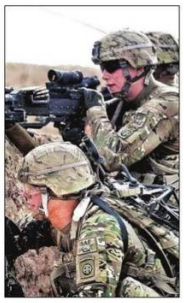

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने तालिबान के साथ चल रही वार्ता को रद्द करने का एलान किया है। वास्तव में अफगानिस्तान में अमन के लिए किया गया कोई भी प्रयास तब तक सफल नहीं हो सकता, जब तक कि सारे पक्षों को इसमें शामिल नहीं किया जाता।

अफगान वार्ता की नाकामी

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने तकरीबन एक साल से तालिबान के साथ चल रही शांति वार्ता को ऐन उस खत्म करने का एलान किया है, जब ऐसी खबरें आ रही थीं कि दोनों पक्षों के बीच समझौता अंतिम चरण में पहुंच चुका है। तालिबान के हमले में एक अमेरिकी सैनिक की मौत को उन्होंने अपने इस फैसले की वजह बताया है, और ऐसे भी संकेत हैं कि अंदरखाने फिर से बातचीत की कोशिश हो सकती है। वास्तव में तालिबान के साथ चल रही बातचीत को युद्ध से जर्जर अफगानिस्तान से अमेरिकी फौज की वापसी के उतावलेपन के रूप में कहीं अधिक देखा जा रहा था। कहा तो यह भी जा रहा था कि तालिबान इस बात पर सहमत हो गए थे कि वे अपनी जमीन से अल कायदा या आईएस को अमेरिका के खिलाफ किसी तरह का अभियान चलाने न देने पर सहमत हो गए हैं! जबकि वास्तविकता यह है कि तालिबान को सबसे बड़ा समर्थन पाकिस्तान से मिलता है, लिहाजा जब तक उस पर अंकुश नहीं लगता, तालिबान से किसी तरह की उम्मीद नहीं की जा सकती। इस वार्ता की सफलता शुरू से ही संदिग्ध थी, क्योंकि इससे अफगानिस्तान की निर्वाचित सरकार को ही अलग रखा गया था, वह भी तब, जब वहां इसी महीने चुनाव प्रस्तावित हैं। अफगानिस्तान में अमन के लिए किया गया कोई भी प्रयास तब तक सफल नहीं हो सकता, जब तक कि सारे पक्षों को इसमें शामिल नहीं किया जाता। लेकिन ट्रंप ही नहीं, बराक ओबामा के समय से अमेरिका किसी भी तरह से अफगानिस्तान से पीछा ही छुड़ाना नजर आया है, क्योंकि पाकिस्तान में ओसामा बिन लादेन के खात्मे के बाद से अमेरिका की दिलचस्पी अफगानिस्तान में कम हो गई है। जहां तक भारत की बात है, तो वह तालिबान के साथ हुए प्रशासन की बातचीत को अमेरिकी फौज की वापसी के समझौते के तौर पर ही देख रहा था। बदली हुई परिस्थिति में भारत को सतर्क रहने की जरूरत है, क्योंकि जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 को निष्प्रभावी किए जाने के बाद से खुल्ल पाकिस्तान इसका फायदा उठाने की कोशिश करेगा। यह विडंबना ही है कि 9/11 के अठारह साल बाद अफगानिस्तान आज तक राजनीतिक अस्थिरता और अनिश्चितता के भंवर से निकल ही नहीं पाया है और निकट भविष्य में ऐसे आसार भी नजर नहीं आ रहे हैं।

भरोसे के बावजूद पुलिस का डर

भारतीय पुलिस, जिसकी स्थापना 1843 में हुई और जो अब भी काफी हद तक ब्रिटिश कालीन भारतीय पुलिस अधिनियम, 1861 के अनुसार काम करती है, भारत के वर्ग, जाति, लिंग और धार्मिक विविधता के साथ तालमेल बिठाने के लिए संघर्ष कर रही है। इसका कारण प्रशिक्षण, संवेदनशीलता का अभाव और/या स्टेटस ऑफ पुलिसिंग इन इंडिया की 2018 की रिपोर्ट के अनुसार पुलिसकर्मियों में निहित पक्षपात की भावना हो सकती है।

कॉमन कॉज और दिल्ली स्थित शोध संस्थान विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस) की एक संस्था लोकनीति के द्वारा जब हमने भारत के 22 राज्यों में एक सर्वे किया, तो उत्तरदाताओं के बीच विरोधाभासी दावे पाए गए, जहां लोगों ने बेवजह उत्पीड़न और फंसने के डर के बावजूद पुलिस में उच्च स्तर का भरोसा जताया। कम से कम 44 फीसदी लोगों ने पीटे जाने का डर व्यक्त किया, 38 फीसदी लोगों ने झूठे आरोप में गिरफ्तार करने का भय जाहिर किया, 38 फीसदी को झूठे मामलों में फंसने का डर था, 29 फीसदी महिलाओं ने यौन उत्पीड़न का डर जताया, 54 फीसदी लोगों ने कहा कि उन्हें पुलिस बर्बरता का व्यक्तिगत अनुभव है, और 51 फीसदी लोगों का मानना है कि पुलिस वर्ग के आधार पर भेदभाव (यूपी और बिहार में 73 फीसदी तक) करती है। ऐसी नकारात्मक राय के बावजूद, 69 फीसदी लोगों ने पुलिस पर विश्वास जताया और 65 फीसदी लोगों ने पुलिस के प्रति उच्च संतुष्टि का दावा किया।

पुलिस बर्बरता के बारे में जागरूकता के बावजूद, पुलिस में विश्वास और संतुष्टि भारत में एक प्रचलित 'राष्ट्रवादी' वातावरण के रूप में देखी जा सकती है, जो कथित तौर पर शासन और कानून के राज को कमजोर करता है, लेकिन राज्य-नियंत्रित संस्थानों के पक्ष में विश्वबस और वफादारी की मांग करता है। शोषण और अकर्मण्यता के बावजूद कई लोग पुलिस को भारी समर्थन देंगे, क्योंकि लोकतांत्रिक शासन की संरचना लोकतांत्रिक संस्थानों के अस्तित्व पर ही निर्भर करती है। रिपोर्ट में यह भी खुलासा किया गया है कि कम से कम 50 प्रतिशत लोग पुलिस हिरासत में कथित अपराधियों के खिलाफ हिंसा को समर्थन देते हैं। हिंदुओं और मुसलमानों ने पुलिस हिंसा का समान रूप से समर्थन किया, जबकि अनुसूचित जनजाति (एसटी) और ईसाई उनसे कम सहमत थे। कम से कम 48 प्रतिशत ग्रामीण भारतीय पुलिस हिंसा का समर्थन करते हैं; शहरी आंकड़े से सात प्रतिशत कम। एसटी और ईसाई ऐसे समुदाय हैं, जो अपने मुद्दों को लेकर कम मुखर रहे हैं और उन्हें राजनीतिक रूप से हाशिये पर माना जा सकता है, जबकि संस्थागत भेदभावों का सामना करने के बावजूद दलित और मुस्लिम नफरती हमलों के खिलाफ विरोध करके अपना गुस्सा जताने में सक्षम रहे हैं। यह लोकतांत्रिक व्यवस्था उन्हें पुलिस पर अधिक भरोसा करने की अनुमति देती है।

जिन राज्यों में पुलिस हिंसा को भारी समर्थन मिला, वे हैं-तमिलनाडु (61.5 फीसदी), गुजरात (58.1 फीसदी), केरल (61.2 फीसदी) और दिल्ली (60.1 फीसदी)। जिन राज्यों में पुलिस हिंसा का काफी विरोध किया गया, वे राज्य हैं- हिमाचल प्रदेश (54.1 फीसदी), ओडिशा (42.2 फीसदी) और पश्चिम बंगाल (42.2 फीसदी)। शुरू के तीन राज्य ज्यादा औद्योगिकीकृत और शिक्षित हैं, तथा बाद के तीन राज्यों की तुलना में ज्यादा जीवंत माने जाते हैं। एक धारणा है कि आधुनिकीकरण, धन, शहरीकरण और उच्च शिक्षा मानव अधिकारों के लिए ज्यादा सम्मान का कारण बनते हैं, लेकिन सर्वे के निष्कर्ष शासन के इस तरीके का समर्थन नहीं करते हैं।

केरल को छोड़कर दक्षिण भारत में पुलिस का डर ज्यादा पाया गया। पंजाब को छोड़कर उत्तर भारत में पुलिस का डर कम था। हमारी रिपोर्ट में इस मिथक का पर्दाफाश किया गया है कि दक्षिण भारतीय राज्यों में पुलिस–प्रशासन, शिक्षा, औद्योगिकीकरण और सामाजिक और आर्थिक विकास के अन्य पहलुओं के मामले में ज्यादा लोक हितैषी वातावरण में काम करती है।

दक्षिण भारतीय राज्यों में मुसलमानों को देश के अन्य क्षेत्रों की तुलना में पुलिस (61 प्रतिशत) से अधिक भय है, संभवतः आतंकवाद के मनगढ़ंत आरोपों के आधार पर गिरफ्तारी की अधिक संख्या के कारण। सिखों (46 फीसदी) ने एक धार्मिक समुदाय के रूप में पुलिस का डर ज्यादा बताया। हिंदुओं में अन्य पिछड़ी जातियों (52 फीसदी), अनुसूचित जातियों (45 फीसदी) और अनुसूचित जनजातियों (45 फीसदी) ने पुलिस के भारी डर की बात बताई, जबकि सवर्ण जातियों (36 फीसदी) ने पुलिस के डर को कम बताया। इन आंकड़ों को पुलिस बल में इन कमजोर समूहों के प्रतिनिधित्व और आरक्षण व्यवस्था की विफलता के संदर्भ में भी देखा जा सकता है।

इस रिपोर्ट में ओबीसी के राजनीतिक मिथकों का भी भंडाफोड़ किया गया है, जिसमें कहा जाता है कि उत्तर प्रदेश जैसे हिंदी भाषी राज्यों में आरक्षण सरकारी नौकरियों को खा गया है। यह तर्क देता है कि आरक्षण किसी भी राज्य में सामुदायिक आबादी के अनुपात में है। अन्य पिछड़ी जाति के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के शासन काल में उत्तर प्रदेश में ओबीसी को आरक्षित कोटा का 40 फीसदी से भी कम मिला, जबकि आरक्षित सीटों का प्रतिशत 2013 में जहां 61 फीसदी था, वह 2016 में 39.6 फीसदी रह गया।

कमजोर समुदायों के लोगों ने पुलिस पर फर्जी आरोपों में फंसाने का आरोप लगाया है। अपराध में कमी देखने की उत्सुकता में नागरिक पुलिस पर भरोसा करते हैं। जहां तक अपराध की जांच और सजा की बात है, लोग आम तौर पर प्रक्रियाओं और कानूनी सिद्धांतों की परवाह नहीं करते हैं-इस प्रवृत्ति को मनोरंजन उद्योग और मीडिया द्वारा बढ़ावा दिया गया है। इसका प्रकोप सबसे ज्यादा मुसलमानों, दलितों और आदिवासियों को झेलना पड़ता है।

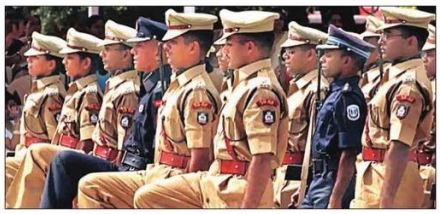

पुलिस पर भरोसे और कम डर की रिपोर्ट के बावजूद कमजोर समुदायों के लोगों ने पुलिस पर उन्हें फर्जी आरोपों में फंसाने का आरोप लगाया।

शाकिब अयाज, सीएसडीएस से संबद्ध

अंतर्ध्वनि

>> भवानी प्रसाद मिश्र

दूर की कौड़ी लाने की महत्वाकांक्षा मैंने कभी नहीं की

कोई भी अनचाहा, बेमन का काम करणीय नहीं होता। कवि और कविता के बारे में जितनी बातें कही और लिखी जाती हैं, उनके आसपास जो प्रकाश-मंडल खींचा जाता है और उन्हें जो रोजमर्रा मिलने वाले आदमियों और इनकी कृतियों से कुछ अलग स्वभाव, प्रेरणाओं और सामथ्र्यों की चीज माना जाता है, वैसा कम से कम अपने बारे में मुझे कभी नहीं लगा। हो सकता है कि मैं कवि हो न होऊं। पुराने कवि मैंने कम पढ़े, नए कवि जो मैंने पढ़े, मुझे उनमें जंचे नहीं। मैंने जब लिखना शुरू किया, तब अगर मैथिलीशरण गुप्त और सियाराम शरण को छोड़ दें, तो छायावादी कवियों की धूम थी। निराला, प्रसाद और पंत फैशन में थे। ये तीनों ही बड़े कवि लकीरों में मुझे अच्छे लगते थे। किसी एक की भी एक पूरी कविता बहुत नहीं भा पायी, तो उनका क्या प्रभाव पड़ता। वड्र्सवर्थ की एक बात मुझे बहुत पटी कि कविता की भाषा यथासंभव बोलचाल के करीब हो। तत्कालीन हिंदी कविता इस ख्याल से बिल्कुल दूसरे सिरे पर थी। तो मैंने जाने-अजाने कविता की भाषा सहज रखी। प्रारंभ की एक रचना में मैंने बहुत सी बातें की थीं, दो पंक्तियां याद हैं-'जिस तरह हम बोलते हैं/ उस तरह तू लिख/ और उसके बाद भी/ हमसे बड़ा तू दिख। मैं भगवान की बात कम करता हूं, जब करता हूं, तो रहस्य की तरह नहीं। क्योंकि इस सिलसिले में मेरे सामने जो कुछ साफ है, वह खुद साफ है और जो साफ नहीं है, उसकी बात करने का अर्थ दूसरों के लिए एक उलझन की संभावना पैदा करने जैसा है। कदाचित इसलिए मैंने अपनी कविता में प्रायः वही लिखा है, जो मेरी ठीक पकड़ में आया है। दूर की कौड़ी लाने की महत्वाकांक्षा मैंने कभी नहीं की। बहुत मामूली रोजमर्रा के सुख-दुख मैंने कविताओं में कहा है, जिनका एक शब्द भी किसी को समझाना नहीं पड़ता-शब्द टप-टप टपकते हैं फूल से, सही हो जाते हैं मेरी भूल से।

-दिवंगत हिंदी कवि।

मंज़िलें और भी हैं

>> अनमोल रॉड्रिग्ज

तेजाब हमले से जीवन समाप्त नहीं हो जाता

अक्सर लोगों को लगता है कि तेजाब हमले से अगर कोई लड़की जली है, तो जरूर यह किसी सिरफिरे आशिक का काम होगा। लेकिन मेरे साथ ऐसा नहीं हुआ। उस समय मैं छोटी थी, मेरी मां ने मुझे अपनी गोद में ले रखा था, जब मेरे पिता ने गुस्से में आकर उन पर तेजाब फेंका। मेरे पिता इस बात से नाराज थे कि मां ने एक बेटी को जन्म दिया है। मां ने मुझे तो ढंक लिया पर वह खुद को नहीं बचा सकीं। मैं मुंबई की रहने वाली हूं। मेरा चेहरा झुलस गया, जबकि एक आंख जाती रही। इस घटना के बार मेरे पिता को जेल हो गई और मुझे अस्पताल में पहुंचा दिया गया, जहां मैं कुछ साल तक रही। मेरा इलाज चल रहा था। मेरा ऐसा कोई नहीं था, जिसके पास मैं जाती और ना ही किसी ने मुझे अपनाया। अस्पताल में डॉक्टरों और नर्सों ने मेरी देखभाल की और बाद में मुझे मानव सेवा संघ अनाथालय को सौंप दिया। वहीं मेरा पालन-पोषण हुआ, वहां बिना भेदभाव के मुझे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिलाई गई और मेरी देखभाल की गई। स्कूल खत्म होने के बाद मैंने उच्च शिक्षा के लिए कॉलेज में प्रवेश लिया, तो चीजें बदलने लगीं।

तेजाब हमले के पीड़ितों को रोजगार के समान अवसर मिलने चाहिए, ताकि वे सामान्य जीवन जी सकें।

कॉलेज में आकर पहली बार मेरा भेदभाव से सामना हुआ। स्कूल के लोग मुझे अजीब से लग रहे थे, कोई भी मेरा दोस्त नहीं बनना चाहता था। पहला वर्ष तो गुजर गया, पर दूसरे वर्ष में मैं तनाव में रहने लगी। मैं ज्यादातर अनाथालय में ही रहने लगी। चूंकि मैं पढ़ने में अच्छी थी और अपनी कक्षा में सबसे आगे रहती थी। अनाथालय के अधिकारियों को मेरे रिजल्ट्स पता थे, तो उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या दिक्कत है, लेकिन मैं उन्हें अपनी इस समस्या के बारे में नहीं बता सकी। इसके बाद अनाथालय ने एक ट्यूटर की सेवा ली, जिसने न केवल मुझे पढ़ाया, बल्कि यह एहसास दिलाया कि मुझे अपने जीवन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए बजाय इसके कि लोग मेरे बारे में क्या सोचते हैं। पढ़ाई पूरी करने के बाद मुझे एक निजी कंपनी में नौकरी भी मिल गई। बावजूद इसके, मेरा संघर्ष समाप्त नहीं हुआ। लोग मुझे ऑफिस में घूरते रहते, तो मुझे बुरा लगता था। लेकिन मैं इस बार तैयार थी, जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ। लेकिन दुर्भाग्य से, कंपनी ने मुझे निकाल दिया, क्योंकि उन्हें लगा कि हर किसी का ध्यान मेरे चेहरे पर जाता है। चूंकि अनाथालय में अठारह वर्ष की उम्र के बाद बाहर रहना होता है, तो मुझे किराए पर घर लेना पड़ा। एक साल के बाद, मुझे एक एनजीओ में नौकरी मिल गई। इस दौरान, मैं कई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से जुड़ गई और अपनी तस्वीरें पोस्ट करनी शुरू कर दी। शुक्र है, मुझे सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग का सामना नहीं करना पड़ा। मैं एक्टिंग, या मॉडलिंग करना चाहती थी, ऑडिशन के बाद कुछ ब्रांड ने प्रचार के लिए भी साइन किया है। इसमें मेरी दोस्त ने मदद की। समाज को कुछ वापस देने के लिए, मैंने एसिड अटैक सर्वाइवर्स की मदद के लिए एक एनजीओ की भी स्थापना की। एक आम आदमी हमारा दर्द नहीं समझ सकता, 22 साल पहले मैं जली थी, लेकिन आज भी मेरे चेहरे और आंखों से पानी आ जाता है। पसीना कई बार खराब आंख में चला जाता है, तो मिर्च लगने जैसी जलन होती है। मेरा मानना है कि, तेजाब हमले के पीड़ितों को रोजगार के समान अवसर मिलने चाहिए, ताकि वे सामान्य जीवन जी सकें। मैं व्यावसायिक तेजाब पीड़ित मॉडल बनना चाहती हूं, जो न केवल फैशन को बढ़ावा दे, बल्कि यह जागरूकता भी फैलाए कि तेजाब जीवन को समाप्त नहीं करता है। वह केवल चेहरे को बदल सकता है, हमारी आत्मा को बर्बाद नहीं कर सकता।

- विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

अस्थिरता के भंवर में अफगानिस्तान

तालिबान और अमेरिका के बीच शांति वार्ता के स्थगित होने के बाद अब देखना यह होगा कि अमेरिकी प्रशासन अफगानिस्तान को लेकर क्या नीति अपनाता है। इधर भारत ने इस बदले हुए घटनाक्रम से राहत की सांस ली है, क्योंकि वहां बहुत कुछ दांव पर लगा हुआ है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने चुनावी अभियान के दौरान सैनिकों की अफगानिस्तान से वापसी का वादा किया था। अमेरिका में अगले साल राष्ट्रपति का चुनाव होना है। ट्रंप इससे पहले हर सूरत में अफगानिस्तान में तैनात 14,000 अमेरिकी सैनिकों को कम कर 8,000 करना चाहते हैं। पिछले एक साल से अमेरिका की तालिबान से बातचीत जारी है। वार्ता के नौ दौर हो चुके हैं। समझौता होने जा रहा था, पर इसमें बाधा आ गई है। अमेरिका, तालिबान और अफगान नेताओं के बीच होने वाली खुफिया बैठक रद्द कर दी गई है। काबुल में पिछले सप्ताह तालिबान द्वारा की गई बमबारी के मद्देनजर यह कदम उठाया गया। शांति वार्ता भी रद्द कर दी गई है।

बहरहाल, अमेरिकी विदेश मंत्री ने कहा है कि अगर तालिबान अपने बर्ताव में बदलाव लाएं और अपने वादों पर कायम रहने का वचन दोहराएं, तो बातचीत फिर शुरू की जा सकती है। सच तो यह है कि अमेरिका अफगानिस्तान से निकलने के लिए बेताब है और तालिबान अफगानिस्तान में दोबारा सत्ता पर कब्जा के लिए बेचैन है। इसलिए शांति समझौता देर-सबेर हो सकता है। जबकि आम ख्याल यह है कि यह समझौता अगर हो भी गया, तो टिकाऊ साबित नहीं होगा।

ट्रंप राजनीतिक लाभ के लिए अफगानिस्तान से अपनी सेना निकालने के लिए प्रयत्नशील हैं और अफगानिस्तान को उसके रहमो-करम पर छोड़ने के लिए तैयार हैं। ट्रंप का कहना है कि अमेरिका 7,000 किलोमीटर की दूरी से काम कर रहा है, जबकि भारत-पाक अफगानिस्तान के निकट होते हुए भी कुछ नहीं कर रहे। अब उनको भी लड़ाई में शामिल होना होगा। जबकि इस सैन्य संघर्ष में भारत के शामिल होने की कोई नीति नहीं है। और यह बात कई बार अमेरिका को स्पष्ट कर दी गई है। पाकिस्तान ने तो अफगानिस्तान के मामले को कश्मीर से जोड़कर अपने हाथ खड़े कर लिए हैं, जबकि भारत ने वहां स्थायी शांति के लिए एक बहुत बड़ा रोल अदा किया है। पिछले कई साल में भारत ने अफगानिस्तान में तीन अरब डॉलर निवेश कर सड़कें-बांध और अन्य कई परियोजनाएं पूरी की हैं। वहां के संसद भवन का निर्माण किया है। हजारों पुलिस व सुरक्षाकर्मियों को प्रशिक्षण दिया है। हेलिकॉप्टर व अन्य सैनिक साजो-सामान की पूर्ति की है। चंद दिन पहले ही अफगानिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति हामिद करजई भारत आए थे। उन्होंने प्रधानमंत्री के साथ हुई भेंट में अफगानिस्तान को समर्थन के लिए धन्यवाद अदा किया, वहीं मोदी ने भी समावेशी, संगठित, सही अर्थों में स्वतंत्र और लोकतांत्रिक अफगानिस्तान की शांति, सुरक्षा, स्थायित्व के लिए भारत के सतत समर्थन को दोहराया। साफ है कि भारत अफगानिस्तान के विकास व शांति बहाली के लिए हर प्रकार की मदद करता रहेगा।

कुलदीप तलवार

अफगानिस्तान और अमेरिका के बीच शांति वार्ता के स्थगित होने के बाद अब देखना यह होगा कि अमेरिकी प्रशासन अफगानिस्तान को लेकर क्या नीति अपनाता है। इधर भारत ने इस बदले हुए घटनाक्रम से राहत की सांस ली है, क्योंकि अफगानिस्तान में भारत का बहुत कुछ दांव पर लगा हुआ है। इसलिए भारतीय विदेश मंत्रालय को हर गतिविधियों पर पैनी नजर रखनी होगी। ट्रंप के पल-पल बदलते बयानों पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

भारत को विशेष सतर्कता और सावधानी बरतने की जरूरत है, ताकि तालिबान और आईएस दहशतगर्दों के नापाक मंसूबों को नाकाम किया जा सके। आगामी 28 सितंबर को अफगानिस्तान में राष्ट्रपति का चुनाव भी है। अब देखना यह है कि यह चुनाव शांतिपूर्ण संपन्न होता है या नहीं और अफगानिस्तान के हालात क्या शक्ल अख्तियार करते हैं।

हरियाली और रास्ता

त्रिजल, रॉनी और दादा जी

त्रिजल की कहानी, जिसकी समस्या का समाधान दादा जी की सलाह के बाद हो गया।

त्रिजल और रॉनी अपने दादा जी के साथ नदी किनारे टहल रहे थे। दादा जी थक गए थे, तो थोड़ा सुस्ताने लगे। त्रिजल और रॉनी छोटे-छोटे पत्थर उठाकर नदी की सतह पर उछालने की कोशिश करने लगे। पर पत्थर स्पिन तभी करता है, जब वह कई छलांगें लेकर नदी के उस पार निकल पाए। नहीं तो वह पहली बार में ही पानी में डूब जाएगा। त्रिजल के दादा जी एक नामी क्रिकेटर थे। उनका नाम अच्छे स्पिनर्स में लिया जाता था। पूरी शाम त्रिजल और रॉनी नदी किनारे पत्थरों को स्पिन करने की कोशिश में लगे रहे। रॉनी ने पत्थरों को स्पिन करने की कला सीख ली, पर त्रिजल ऐसा नहीं कर पाया। वह रॉनी को अकेला छोड़कर दादा जी के पास चला आया। वह दादा जी से बोला, मुझसे कुछ नहीं हो पा रहा। सब मुझसे बेहतर करते हैं। रॉनी भी सीख गया है, पर मैं हमेशा हार जाता हूं। दादा जी बोले, मैं एक सलाह दूं, क्या तुम मानोगे? त्रिजल बोला, आप जो भी कहेंगे, वह मैं मानूंगा। दादा जी बोले, पहली बात तो यह कि कोई और तुमसे बेहतर है, यह सिर्फ तुम जानते हो, वह नहीं। इसे अपनी ताकत बनाओ। और दूसरी बात, जो भी काम करो, उसे पूरी लगन से करो। असली जीत तभी है, जब काम करने में मजा आए। नहीं तो जीत भी गए, तो क्या? अभी जो तुम पत्थर से खेल रहे हो, वह असल में मज़े के लिए नहीं, बल्कि सिर्फ जीतने के लिए खेल रहे हो। अपने आपको खुला छोड़ दो। इस परिस्थिति का आनंद लो, तुम्हें अपने आप वह करना आ जाएगा, जो तुम चाह रहे हो। दादा जी ने त्रिजल को एक बार फिर प्रोत्साहित करके नदी के पास भेज दिया। दादा जी भी उसके साथ आकर खड़े हो गए। त्रिजल और रॉनी ने कई पत्थर उछाले, तभी एकदम से त्रिजल का एक पत्थर कई गुलाटियां खाकर नदी के उस पार निकल गया। दादाजी और त्रिजल ने एक दूसरे को तरफ देखा और वे खूब हंसे।

किसी काम में सफलता लगन के साथ काम करने से ही मिलती है।

खुली खिड़की

विदेशी उपग्रहों का प्रक्षेपण

हमारे देश में अंतरिक्ष अनुसंधान गतिविधियों की शुरुआत 1960 के दौरान हुई। इसरो की स्थापना विक्रम साराभाई ने की थी। इसरो ने सिर्फ देशी, बल्कि विदेशी उपग्रहों को उनकी कक्षा में प्रक्षेपित करने का काम कर रहा है। नवंबर 2018 की रिपोर्ट के मुताबिक, इनमें ज्यादातर उपग्रह अमेरिकी थे।

स्रोत : इसरो/विभिन्न स्रोत

अनूठा श्लोक-दीप

महाराजा विक्रमादित्य वीर, न्यायप्रिय तथा अत्यंत उदार शासक थे। एक बार वह अपने गुरु के दर्शन के लिए उनके आश्रम में गए। चरणस्पर्श के बाद उनके समक्ष भूमि पर बैठ गए। बोले, महाराज, मुझे कोई ऐसा प्रेरक वाक्य बताओ, जो महामंत्र बनकर न केवल मेरा, अपितु मेरे उत्तराधिकारी का भी मार्गदर्शन करता रहे। संत ने एक कागज पर संस्कृत का श्लोक लिखकर दे दिया। इसका तात्पर्य था कि प्रतिदिन यह चिंतन करना चहिए कि आज का जो दिन व्यतीत हुआ है, वह पशुवत व्यतीत हुआ है अथवा सत्कर्म से युक्त दिन रहा है।

सत्संग

महाराजा विक्रमादित्य ने दरबार में सिंहासन के ऊपर उस प्रेरक वाक्य को अंकित करा दिया। वह स्वयं प्रतिदिन बैठने से पूर्व इस बात का आकलन करने लगे कि उस दिन उनके हाथों कोई सद्कार्य हुआ है या नहीं। एक दिन अतिव्यस्तता के कारण वह कोई पुनीत कार्य नहीं कर पाए। रात को शयन कक्ष में जाने से पूर्व प्रतिदिन की तरह दिन भर के कार्यों का आकलन करने लगे, तो उन्हें लगा कि दिन भर उनके हाथों से कोई धर्म-कार्य नहीं हो पाया। वह उठे तथा राजमहल से बाहर दूर जंगल की ओर चल पड़े। उन्होंने देखा कि खेत की मेड़ पर एक गरीब किसान भीषण ठंड में खेत की फसल की रखवाली करता-करता सो गया है। महाराजा ने अपनी गरम चादर उतारी तथा उसे ओढ़ा दी। इसके बाद वह चुपचाप राजमहल लौटे और सो गए।

-संकलित